Mohini
V.S.J. College

(Human activities on mountains)

पर्वतों पर मानवीय क्रिया - कलाप

"पर्वतीय ढाल एक प्रयोगशाला है और स्वयं पर्वत सामाजिक प्राचिनताओं का अजायबघर।"

— Miss E.C. Semple

(A) **पर्वतीय जलवायु का प्रभाव** → "ढाल के प्रत्येक भाग पर ताप और वर्षामात्रा के अनुसार ही मानव अपने कार्यों का वातावरण के साथ अनुकूलन करता है।" — Miss E.C. Semple

पर्वतों पर ऊँचाई के अनुसार जलवायु - परिवर्तन होता है। ग्रीष्म - ताप से त्राण के लिए शिमला, मसूरी आदि Hill station है।

वायु सम्मुख ढाल पर काफी वर्षा से वनस्पति और आवास और वृष्टिछाया वाले ढाल पर कम। ~~आल्पस के ऊपर में मैदानों... जलवायु~~

पर्वतों की हिम - रेखाएँ मानवीय क्रिया - कलापों को सीमांकित करती है। ऑक्सीजन की कमी से पर्वत वासी अपने को अभियोजित कर लेते है। फलतः 1500m से ऊंचे पर्वतों पर निवासियों के फेफड़े बड़े और सीना चौड़ा होता है। 2000m से ऊपर के निवासियों के रक्त में लाल कण अधिक होते है ताकि अधिक ऑक्सीजन ले सकें। पर्वतवासियों की माँसपेशियाँ बलिष्ट होती है।

(B) **आबादी** → जन घनत्व कम है। ऊँचाई के साथ जन घनत्व घटता है। घाटियों, खनिज, उद्योग केन्द्रों, धीमें ढालों और उपजाऊ मिट्टी क्षेत्रों में आबादी कुछ अधिक मिलती है। विमुख ढाल की अपेक्षा सूर्य सम्मुख ढाल पर आबादी अधिक है, जैसे हिमालय के

क० धान पर।

(C) **पर्वत और आवास** → परिवहन और विकेन्द्रन के कारण पहाड़ो और पठार के साधारण आवास है। आजो की शैवार्द नहीं तथा पिछे की ढाल के के अनुरूप अनुरूप होती होती है। आवास बिखरे और जल-स्रोतो के पास सीढ़ीनुमा ढालो पर मिलते हैं।

(D) **पर्वत और जन स्थानान्तरण** → शीतकाल में चारागाहों के हिमाच्छादित हो जाने से पशु-चारक पशुओं के साथ निचले ढालो पर आ जाते हैं और ग्रीष्म में पुनः ऊपर चले जाते हैं। इसे Transhuman कहते हैं। Shifting cultivation के कारण भी ये स्थानान्तरित होते रहते हैं

(E) **शरण-स्थ** → आक्रमणों से रक्षा के लिए लोग पर्वतो पर शरण लेते हैं।

(F) **पर्वत का बाधक रूप** → पर्वत जन स्थानान्तरण, परिवहन और आपसी संबंध में भी बाधक होते हैं। फलतः विपरित ढालो पर भिन्न संस्कृति, वेश-भूषा और भाषा के लोग मिलते हैं। पर्वत आक्रमण से रक्षा भी करते है।

(G) **पर्वत और सीमाएँ** → यह दो देशो के बीच दृढ़ प्राकृतिक सीमा का काम भी करता है।

(H) ~~पर्वत और~~ **सामाजिक जीवन** → आपदाओं को झेलने के आदि पर्वतवासी निर्भिक, बहादुर होते हैं। ये स्वस्थ, मिहनती, वीर, साहसी, परिश्रमी, ईमानदार मितव्ययी होते हैं। - ~~T.H.~~ T. M. Haldisch

संस्कृति अविकसित है। उनके रीति-रिवाज और भाषा पर नई दुनियाँ का प्रभाव नहीं पड़ता। आचार-विचार, वेश-भूषा प्राचीन होती है। ये निरक्षर होते हैं। फिर भी "पर्वत संस्कृति के धरोहर होते है" जैसे हिन्दू और बौद्ध धर्मों का कट्टर रूप हिमालय में है।

गरीबी इन्हें झगड़ालू बना देती है। ये प्रतिरोधी होते हैं। प्रशासकीय नियमों की अवहेलना करते हैं। उनका अपना कानून होता है। अंधविश्वास, जादू-टोने, में अटूट आस्था, व्यक्तिवाद, रूढ़िवाद, स्वतंत्रता-प्रेम, धर्मान्धता, परिवार से प्रेम, विदेशियों के प्रति अविश्वास की भावना पायी जाती है। असमतल धरातल के कारण परिवार बिखरे होते हैं। अत: सामाजिक भावना विकसित नहीं होती और भावना की कमी है। पर ये स्वावलम्बी होते हैं।

(I) **परिवहन** → असमतल धरातल है। रेलवे सड़कों का अभाव है। मालों को Rope way, बैल, याक, बकरा, खच्चर, गदहे, लामा, अल्पाका द्वारा ढोया जाता है। पहाड़ी रास्ते वक्र (Winding) होते है।

(J) **कृषि** → कृषि पिछड़ी है। निर्वाहक कृषि है। ऊँ० के साथ कृषि में ह्रास मिलता है। कृषि उपजाऊ, धीमे ढालों पर होती है। पर्वतीय घाटियों (जैसे इन घाटी) में भी कृषि होती है, पर तापीय विलोमता से पाले का भय ऊपरी ढाल की अपेक्षा अधिक होता है। अत: पर्वतीय ढालों पर भी सीढ़ीनुमा खेत बनाए जाते हैं। ऐसे खेतों में मिट्टी-क्षरण कम होता है और सिंचाई में भी सुविधा होती है। कुदाल, खुरपे हसिया परम्परागत कृषि-यंत्र हैं। प्राय: स्थानान्तरित (Jhooming)

(4)

कृषि होती है।
ऊँ० के अनुसार फसलें बदल जाती हैं। व्यवसायिक फसलों में द० अफ्रीका में गन्ना, मलाया में रबड़, आसम में चाय और द०पू० एशिया में कहवा, चाय, चावल, सिनकोना, अनन्नास, रबड़ की खेती है। भूमध्यसागरीय जल क्षेत्रों में पर्वतीय ढालों पर फलों की खेती है। कम वर्षा क्षेत्रों में dry farming है।

(K) **पशु चारण** → यहाँ चारागाह पेटियाँ जो हिम-रेखा और वृक्ष-रेखा के बीच हैं। यहाँ भेड़, बकरी, गाय, बैल, याक, लामा, अल्पाका आदि चराये जाते हैं। Transhumance होता है।

धूपदार ढालों पर पशुचारण होता है। पशुचारण प्रमुख उद्योग है। गाय, बैल, भेड़ बकरी, अल्पाका, विकुना, गदहे, खच्चर पालते हैं।

(L) **वन उद्योग** → नदियों, Rope way द्वारा लकड़ी ढोई जाती है। लकड़हारों का निवास अस्थाई होता है। जंगलों से छाल, फल, जड़ी-बूटी, गोंद, ईंधन की लकड़ी आदि प्राप्त होती है। कोणधारी मुलायम लकड़ी का उपयोग कागज, दियासलाई, कारखानों में होता है।

(M) **आखेट और भोजन संग्रह** → पर्वतीय वनों में जंगली भेड़, सूअर, खरगोश, लोमड़ी आदि का शिकार कुत्तों की सहायता से करते हैं। केला, अंजीर, बेल, आँवला, अखरोट, खुबानी आदि फल एकत्र करते हैं।

(N) **खनिज और शक्ति** → यहाँ आग्नेय चट्टानों में धात्विक और परतदार चट्टानों में कोयला है। रॉकी, एंडिज में सोना, चाँदी, ताँबा, टिन आदि, अप्लेशियन में कोयला और यूराल में लौह-अयस्क है।

पर्वतीय झरनों पर जल-शक्ति केन्द्र है जैसे जोग प्रपात, आर्लेशियन के fall Line पर।

खनिजों के समुदाय होते हैं, अस्थाई होते है। लिंग-अनुपात विषम होता है। जीवन मिरस, चरित्र गिरा होता है। ये प्रायः शराबी, जुआड़ी, वेश्यागामी होते हैं।

(c) उद्योग → अविकसित परिवहन के कारण हल्के उद्योग है। जिनका मूल्य अधिक पर वजन कम है। जैसे — ऊनी वस्त्र, दुशाले, सूक्ष्म यंत्र, कृत्रिम रेशम, प्लास्टिक, दवा, लकड़ी के सामान और खुदाई, जल चक्कियों द्वारा आटा-पिसाई आदि उद्योग (स्विट्जरलैंड, स्कॉटलैंड, नार्वे, U.S.A के पर्वतीय क्षेत्रों में)।

पर्यटन उद्योग → पर्वत यात्रियों, दर्शनार्थियों, सैलानियों को आकर्षित करते हैं जिनकी सुविधा के लिए होटल एवं अन्य उद्योग विकसित हो जाते हैं। ~~इससे विदेशी मुद्रा मिलती है।~~ पर्वतों पर ~~Snowfall~~ Snow-Sports एवं पर्वत-अभियान के लिए भी लोग आते हैं।

असुविधाओं के कारण पर्वतवासी पिछड़े, गरीब, किन्तु मिहनती और बहादुर होते हैं।

"Where climate and soil do so little, man must do much" — E. C. Semple